Online Available at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN: 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(3): 87-91

Review Paper

इलाचंद्र जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास और भारतीय चिंतन

Author(s): डॉ. विजय शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: *डॉ. विजय शर्मा

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचंद जोशी (1903–1982) के कथा-साहित्य का विश्लेषण करता है। जोशी ने फ्रायडीय मनोविश्लेषण – अचेतन, दमन, मनोग्रंथियाँ – को भारतीय वेदांत, सांख्य, और बौद्ध दर्शन की अवधारणाओं के साथ संश्लेषित कर हिंदी उपन्यास को एक नई गहराई प्रदान की। इस शोध में उनके पाँच प्रमुख उपन्यासों – *संन्यासी, पर्दे की रानी, निर्वासित, घृणामयी* और *ऋतुचक्र* — का मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। यह भी परीक्षित किया गया है कि जोशी किस प्रकार प्रेमचंद की सामाजिक-यथार्थवादी परंपरा से भिन्न, व्यक्ति के अंतर्मन को केंद्र में रखते हैं। शोध यह स्थापित करता है कि जोशी का साहित्य पश्चिमी और पूर्वी मनोदर्शन का अनूठा संगम है, तथा आधुनिक मानसिक स्वास्थ्य विमर्श के परिप्रेक्ष्य में भी उनकी प्रासंगिकता अक्षुण्ण है।

Manuscript Information

Received Date: 07-05-2023
Accepted Date: 28-06-2023
Publication Date: 30-06-2023
Plagiarism Checked: Yes
Manuscript ID: IJCRM:2-4-24
Peer Review Process: Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. विजय शर्मा. इलाचंद्र जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास और भारतीय चिंतन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023: 2(3):87-91.

कूट शब्द: मनोवैज्ञानिक, उपन्यास, इलाचंद जोशी, फ्रायडीय मनोविश्लेषण, अचेतन मन।

1. प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास साहित्य में मनोवैज्ञानिक धारा के उद्भव और विकास में इलाचंद जोशी (1903-1982) का नाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जिस समय हिंदी उपन्यास मुख्यतः सामाजिक-सुधारवादी और आदर्शवादी प्रवृत्तियों से जुड़ा था, उस काल में जोशी ने पश्चिमी मनोविश्लेषण — विशेषतः सिग्मंड फ्रायड के सिद्धांतों — को भारतीय चिंतन की उर्वर भूमि में रोपकर एक नई साहित्यिक परंपरा की स्थापना की। जोशी के उपन्यास मानव मन की अतल गहराइयों में उतरते हैं। उनके पात्र केवल बाहरी संघर्षों से नहीं जूझते, बल्कि अपने अचेतन, दमित कामनाओं, ग्रंथियों, और मनोद्वंद्वों से

भी संघर्षरत रहते हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यास केवल कहानी नहीं हैं — वे मानव आत्मा के विच्छेदन हैं।

इस शोध पत्र में हम इलाचंद जोशी के प्रमुख उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक और भारतीय दार्शनिक दृष्टि से विश्लेषण करेंगे। यह भी देखेंगे कि किस प्रकार जोशी ने फ्रायड के पश्चिमी मनोविज्ञान को भारतीय वेदांत, सांख्य, और बौद्ध चिंतन के साथ जोड़कर एक मौलिक साहित्यिक दृष्टि विकसित की।

2. इलाचंद जोशी: जीवन और साहित्यिक व्यक्तित्व

इलाचंद जोशी का जन्म 7 दिसंबर 1903 को अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में हुआ था। कुमाऊँ की पर्वतीय भूमि, वहाँ का सांस्कृतिक वातावरण, और लोक-जीवन ने उनकी संवेदनशीलता को गहराई से प्रभावित किया। बचपन से ही वे जिज्ञासु, अंतर्मुखी और चिंतनशील प्रवृत्ति के थे।

जोशी ने स्वाध्याय से पश्चिमी दर्शन, मनोविज्ञान, और साहित्य का गहन अध्ययन किया। फ्रायड, एडलर, युंग, दोस्तोयेव्स्की, टॉल्स्टॉय, और हार्डी जैसे विचारकों और साहित्यकारों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। साथ ही उपनिषद्, गीता, और बौद्ध दर्शन में उनकी गहरी रुचि थी जो उनके साहित्य में अंतर्धारा के रूप में प्रवाहित होती है।

उनका साहित्यिक जीवन दो भूमिकाओं में विभक्त था — एक ओर वे सृजनशील उपन्यासकार थे, तो दूसरी ओर एक गंभीर आलोचक भी। उन्होंने हिंदी साहित्य पर मनोविश्लेषणात्मक आलोचना की नींव रखी। उनकी प्रमुख कृतियों में संन्यासी (1941), पर्दे की रानी (1941), निर्वासित (1946), घृणामयी (1946), और ऋतुचक्र (1950) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

2.1 आलोचक और सिद्धांतकार के रूप में

जोशी ने केवल उपन्यास नहीं लिखे, बल्कि हिंदी साहित्य-समीक्षा को भी एक नई दिशा दी। उनकी आलोचना पुस्तक 'साहित्य-सर्जन' (1944) और 'विवेचना' में उन्होंने मनोवैज्ञानिक आलोचना-पद्धति को हिंदी में स्थापित किया। उनका मानना था कि महान साहित्य वही है जो मानव मन की अचेतन परतों को उद्घाटित करे।

3. फ्रायड और भारतीय मनोविज्ञान: जोशी का संश्लेषण

इलाचंद जोशी के साहित्य को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम फ्रायड के मनोविश्लेषण और भारतीय मनोवैज्ञानिक चिंतन के बीच के संबंध को स्पष्ट करें। जोशी ने दोनों के बीच एक सेतु का निर्माण किया।

3.1 फ्रायडीय मनोविश्लेषण के तत्त्व

फ्रायड के अनुसार मानव व्यवहार मुख्यतः अचेतन मन से संचालित होता है। दमित कामनाएँ, बचपन के अनुभव, और मनोग्रंथियाँ (complexes) मानव के समग्र व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इड (id), ईगो (ego), और सुपर-ईगो (super-ego) के बीच का संघर्ष ही मनुष्य के समस्त मनोद्वंद्वों का मूल है। इडिपस कॉम्प्लेक्स, इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स, नार्सिसिज़्म, और लिबिडो के सिद्धांत फ्रायड के मनोविज्ञान के केंद्रीय तत्त्व हैं।

3.2 भारतीय मनोदर्शन की परंपरा

भारतीय दर्शन में मन का विश्लेषण बहुत प्राचीन काल से होता आया है। सांख्य दर्शन में चित्त (मन), अहंकार, बुद्धि, और मन की सूक्ष्म परतों का विवेचन किया गया है। योग-दर्शन में चित्तवृत्तियों के निरोध की चर्चा है। अद्वैत वेदांत में अविद्या और माया के कारण जीव के भटकाव को समझाया गया है। बौद्ध दर्शन में अनित्यता, अनात्म, और तृष्णा के कारण दुःख का विवेचन किया गया है।

3.3 जोशी का मौलिक संश्लेषण

जोशी ने फ्रायड के अचेतन को भारतीय दर्शन की 'अविद्या' और 'माया' की अवधारणाओं के साथ जोड़कर देखा। फ्रायडीय दमन (repression) को उन्होंने भारतीय 'संस्कार' और 'वासना' की अवधारणाओं से संबंधित किया। उनके उपन्यासों के पात्र एक साथ फ्रायडीय ग्रंथियों से पीड़ित भी हैं और भारतीय दार्शनिक संकट में भी डूबे हुए हैं। यह द्वैतता ही उनके साहित्य को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करती है।

"जोशी ने फ्रायड को भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पढ़ा और उनके उपन्यासों में पश्चिमी और पूर्वी मनोदर्शन का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है।" — डॉ. रामविलास शर्मा

4. प्रमुख उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

4.1 संन्यासी (1941)

'संन्यासी' जोशी का पहला प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसके नायक का गृह-त्याग और संन्यास ग्रहण करना बाह्य दृष्टि से आध्यात्मिक प्रतीत होता है, किंतु मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से यह दमित मनोग्रंथियों का परिणाम है। नायक की माँ के प्रति अत्यधिक आसक्ति और उससे उत्पन्न मनोद्वंद्व ही उसे संसार से विरक्त करता है। उपन्यास में इडिपस कॉम्प्लेक्स का सूक्ष्म चित्रण है। माँ की मृत्यु के बाद नायक किसी भी नारी-संबंध को स्वीकार नहीं कर पाता क्योंकि अचेतन में माँ की छवि इतनी प्रबल है कि हर नारी में वह माँ को ही देखता है। संन्यास इस अपूर्ण

इच्छा का उदात्तीकरण (sublimation) है। भारतीय संदर्भ में यह वैराग्य की अवधारणा से जुड़ता है, किंतु जोशी यह स्पष्ट करते हैं कि यह वैराग्य आत्म-ज्ञान से नहीं, बल्कि मनोग्रंथि से जन्मा है।

4.2 पर्दे की रानी (1941)

'पर्दे की रानी' में जोशी ने एक ऐसी नायिका का चित्रण किया है जो सामाजिक पर्दे के पीछे अपनी अतृप्त कामनाओं को छुपाए हुए है। उपन्यास का केंद्रीय संघर्ष सामाजिक मर्यादा और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच है। नायिका का व्यवहार बाहर से अत्यंत संयमित और परंपरापालक है, किंतु भीतर से वह अचेतन इच्छाओं का ज्वालामुखी है।

फ्रायडीय दृष्टि से यह उपन्यास दमन (repression) और प्रतिक्रिया-निर्माण (reaction formation) का उत्कृष्ट उदाहरण है। नायिका जिस व्यवहार को बाहर दिखाती है, वह उसकी वास्तविक भावनाओं के ठीक विपरीत है। भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री पर आरोपित 'पर्दा' न केवल भौतिक है बल्कि मनोवैज्ञानिक भी है — और जोशी इसी मनोवैज्ञानिक पर्दे को उठाते हैं।

4.3 निर्वासित (1946)

'निर्वासित' जोशी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। इसके नायक का निर्वासन केवल भौगोलिक नहीं है — वह अपने ही मन से, अपने समाज से, और अपनी जड़ों से निर्वासित है। यह अस्तित्ववादी संकट (existential crisis) का चित्रण है जो भारतीय दर्शन के 'मोह' और 'अज्ञान' की अवधारणाओं से गहरे रूप में जुड़ा है।

नायक पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करके भारत लौटता है और दोनों संस्कृतियों के बीच अपने को निर्वासित पाता है। वह न पूर्णतः पश्चिमी बन सका है और न पूर्णतः भारतीय रह सका है। यह सांस्कृतिक विखंडन (cultural fragmentation) आधुनिक भारतीय मानस का एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक संकट है जिसे जोशी ने बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा है।

4.4 घृणामयी (1946)

'घृणामयी' में जोशी ने घृणा और प्रेम के बीच की पतली रेखा को अत्यंत कुशलता से उकेरा है। फ्रायड के अनुसार घृणा प्रायः दमित प्रेम का विकृत रूप होती है। इस उपन्यास की नायिका अपनी निराशाओं और पीड़ाओं के कारण घृणा को ही जीने का माध्यम बना लेती है।

भारतीय दर्शन में द्वेष को क्लेश माना गया है — यह अज्ञान से उत्पन्न होता है और दुःख का कारण बनता है। जोशी का नायिका-चित्रण इस दार्शनिक सत्य को मनोवैज्ञानिक धरातल पर उतारता है। घृणा यहाँ केवल एक भाव नहीं, एक जीवन-दर्शन बन जाती है — और यही त्रासदी का मूल है।

4.5 ऋतुचक्र (1950)

'ऋतुचक्र' जोशी के परिपक्व कला-कौशल का प्रतिनिधि उपन्यास है। ऋतुओं के रूपक के माध्यम से उन्होंने मानव-जीवन की क्षणभंगुरता, काल-प्रवाह, और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का चित्रण किया है। जीवन के विभिन्न चरणों में मानवीय इच्छाएँ, निराशाएँ, और मनोद्वंद्व किस प्रकार परिवर्तित होते हैं — यह इस उपन्यास का केंद्रीय विषय है।

बौद्ध दर्शन की अनित्यता की अवधारणा और फ्रायडीय लिबिडो का उतार-चढ़ाव इस उपन्यास में एकाकार हो जाते हैं। जोशी यहाँ सिद्ध करते हैं कि मानव मन की चक्रीय प्रकृति को समझने के लिए पूर्व और पश्चिम दोनों के विचार आवश्यक हैं।

5. भारतीय दार्शनिक चिंतन और उपन्यास

5.1 वेदांत और जोशी का साहित्य

अद्वैत वेदांत के अनुसार जीव का दुःख अज्ञान (अविद्या) के कारण है। जब तक मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानता, वह माया के बंधन में रहता है। जोशी के पात्र भी इसी अज्ञान के शिकार हैं — किंतु वे वेदांती अर्थ में नहीं, मनोवैज्ञानिक अर्थ में। उनका अज्ञान अपने अचेतन मन से, अपनी दमित भावनाओं से, और अपने वास्तविक मनोवैज्ञानिक स्वरूप से अपरिचित रहता है।

5.2 सांख्य-योग और मनोविश्लेषण

सांख्य दर्शन में पुरुष (चेतना) और प्रकृति के बीच विवेक का अभाव ही बंधन का कारण है। योग में चित्तवृत्तियों के निरोध से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया है। जोशी के उपन्यासों में यही संघर्ष फ्रायडीय भाषा में व्यक्त होता है — इड और सुपर-ईगो का संघर्ष, ईगो की पराजय, और मनोग्रंथियों का अनिवार्य प्रभाव। जोशी अपने पात्रों को मुक्ति का मार्ग नहीं दिखाते — वे उनके मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर करते हैं।

5.3 बौद्ध तृष्णा-सिद्धांत

बुद्ध के अनुसार तृष्णा ही सभी दुःखों का मूल है। जोशी के पात्र इसी तृष्णा से पीड़ित हैं — कभी प्रेम की, कभी मान्यता की, कभी मुक्ति की। और यह तृष्णा कभी पूर्ण नहीं होती। जोशी का साहित्य एक प्रकार से आधुनिक संदर्भ में बौद्ध दुःखवाद का मनोवैज्ञानिक पुनर्कथन है।

6.पात्रों की अचेतन मनोग्रंथियाँ

जोशी के उपन्यासों में पात्र-निर्माण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक पात्र किसी-न-किसी मनोग्रंथि से आवद्ध है। ये मनोग्रंथियाँ बचपन के आघातों, निराश प्रेम, सामाजिक अपमान, या पारिवारिक संबंधों की विकृतियों से उत्पन्न होती हैं।

6.1 इडिपस और इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स

फ्रायड के इडिपस कॉम्प्लेक्स — अर्थात् पुत्र का माँ के प्रति अत्यधिक आसक्ति और पिता के प्रति ईर्ष्या — का जोशी के उपन्यासों में बारंबार चित्रण मिलता है। 'संन्यासी' में यह सर्वाधिक स्पष्ट है। इसी प्रकार स्त्री-पात्रों में इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स — पिता के प्रति अत्यधिक आसक्ति — का सूक्ष्म चित्रण जोशी की मनोवैज्ञानिक दृष्टि की गहराई को प्रकट करता है।

6.2 हीनता-ग्रंथि और श्रेष्ठता-ग्रंथि

एडलर के हीनता-ग्रंथि (inferiority complex) के सिद्धांत का भी जोशी के साहित्य में प्रभाव दिखता है। उनके अनेक पात्र अपनी हीनता की भावना को छुपाने के लिए अत्यधिक अहंकार और श्रेष्ठता का मुखौटा लगा लेते हैं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य भारतीय समाज के जाति, वर्ग, और लिंग-आधारित विभेद के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है।

6.3 युंग का सामूहिक अचेतन

कार्ल युंग के सामूहिक अचेतन (collective unconscious) और पुरातन प्रतिमानों (archetypes) का प्रभाव भी जोशी के साहित्य में दिखता है। भारतीय पौराणिक प्रतिमान — माँ, पिता, नायक, छाया — उनके पात्रों के मनोवैज्ञानिक ढाँचे में अंतर्गुंफित हैं। यह युंगीय और भारतीय पुराण-परंपरा के बीच एक अनायास किंतु सार्थक संयोग है।

7. नारी-मनोविज्ञान और सामाजिक द्वंद्व

जोशी के उपन्यासों में नारी-पात्र विशेष महत्त्व रखते हैं। वे केवल सामाजिक परिस्थितियों की शिकार नहीं हैं, बल्कि अपनी मनोग्रंथियों, दमित इच्छाओं, और सामाजिक दबावों के बीच पिसती एक जटिल मनोवैज्ञानिक सत्ता हैं।

7.1 दमन और विद्रोह

भारतीय नारी सदियों से अपनी इच्छाओं को दबाती आई है। जोशी के उपन्यासों में यह दमन मनोवैज्ञानिक स्तर पर दिखाई देता है। 'पर्दे की रानी' की नायिका से लेकर 'घृणामयी' की नायिका तक — सभी इस दमन की पीड़ा को किसी-न-किसी रूप में व्यक्त करती हैं। जोशी यह दिखाते हैं कि दमन कभी स्थायी नहीं होता — वह किसी-न-किसी रूप में विस्फोट करता ही है।

7.2 भारतीय नारीत्व की अवधारणा और मनोवैज्ञानिक संकट

भारतीय संस्कृति में नारी के लिए 'सती', 'देवी', और 'माँ' की भूमिकाएँ निर्धारित हैं। जोशी दिखाते हैं कि इन आदर्श भूमिकाओं के भार तले नारी का वास्तविक मनोवैज्ञानिक अस्तित्व कुचल दिया जाता है। जब यह आदर्श और वास्तविकता के बीच की खाई असह्य हो जाती है, तो मनोवैज्ञानिक संकट अवश्यंभावी है।

8. जोशी और समकालीन हिंदी उपन्यास परंपरा

इलाचंद जोशी हिंदी मनोवैज्ञानिक उपन्यास परंपरा के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनसे पूर्व हिंदी उपन्यास में प्रेमचंद का यथार्थवाद और आदर्शवाद प्रमुख था। जोशी ने इस परंपरा को एक नई दिशा दी।

8.1 प्रेमचंद से भिन्नता

प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित थे और उनके पात्र सामाजिक शक्तियों के प्रतिनिधि थे। जोशी के पात्र अपनी मनोवैज्ञानिक जटिलताओं के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। जहाँ प्रेमचंद का ध्यान समाज पर था, वहाँ जोशी का ध्यान व्यक्ति के अंतर्मन पर था। यह दो भिन्न साहित्यिक दृष्टियाँ हैं जो एक-दूसरे की पूरक भी हैं।

8.2 जैनेंद्र और अज्ञेय के साथ तुलना

जैनेंद्र कुमार और अज्ञेय भी मनोवैज्ञानिक उपन्यास-परंपरा में महत्त्वपूर्ण नाम हैं। जैनेंद्र के उपन्यासों में गांधीवादी चिंतन के साथ मनोवैज्ञानिक तत्त्व मिलते हैं, तो अज्ञेय में अस्तित्ववाद की प्रमुखता है। जोशी इन दोनों से इस अर्थ में भिन्न हैं कि वे अधिक स्पष्ट रूप से फ्रायडीय मनोविश्लेषण को भारतीय संदर्भ में लागू करते हैं।

8.3 परवर्ती प्रभाव

जोशी की मनोवैज्ञानिक परंपरा का प्रभाव परवर्ती हिंदी उपन्यासकारों पर भी पड़ा। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, और उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी के अंतर्मन का जो सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है, उसकी पृष्ठभूमि में जोशी की परंपरा भी काम करती है। हिंदी साहित्य को एक गहरी मनोवैज्ञानिक दृष्टि देने का श्रेय निश्चित रूप से जोशी को जाता है।

9. उपसंहार

इलाचंद जोशी हिंदी साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने पश्चिमी मनोविज्ञान और भारतीय दर्शन के बीच एक सार्थक और मौलिक संवाद स्थापित किया। उनके उपन्यास मानव मन की उन परतों को उजागर करते हैं जिन्हें सामान्यतः समाज और साहित्य दोनों अनदेखा करते हैं। दमित इच्छाएँ, अचेतन मनोग्रंथियाँ, सामाजिक पर्दे के पीछे छिपा मनोवैज्ञानिक सत्य — जोशी के उपन्यास इन्हीं की कथा कहते हैं।

भारतीय चिंतन की दृष्टि से देखें तो जोशी के पात्र 'अविद्या' के शिकार हैं — वे अपने वास्तविक मनोवैज्ञानिक स्वरूप से अनभिज्ञ हैं और इसी अज्ञान के कारण दुःख भोगते हैं। फ्रायडीय दृष्टि से देखें तो उनके पात्रों का दुःख दमित इच्छाओं और मनोग्रंथियों का परिणाम है। दोनों दृष्टियाँ एक ही मूल सत्य को अलग-अलग भाषाओं में कहती हैं — मनुष्य अपने अज्ञान के कारण दुःखी है, और यह अज्ञान अत्यंत गहरा तथा बहुस्तरीय है।

जोशी का साहित्य हिंदी उपन्यास-परंपरा में एक अनिवार्य मील का पत्थर है। उन्होंने न केवल हिंदी उपन्यास को मनोवैज्ञानिक गहराई दी, बल्कि यह भी दिखाया कि भारतीय साहित्य वैश्विक साहित्यिक और दार्शनिक विमर्श में अपना मौलिक योगदान दे सकता है। आज जब मानसिक स्वास्थ्य और मनोविज्ञान एक वैश्विक विमर्श के केंद्र में हैं, तब इलाचंद जोशी की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

संदर्भ सूची

1. जोशी I. *संन्यासी*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1941.
2. जोशी I. *पर्दे की रानी*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1941.
3. जोशी I. *निर्वासित*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1946.
4. जोशी I. *घृणामयी*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1946.
5. जोशी I. *ऋतुचक्र*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1950.
6. जोशी I. *साहित्य-सर्जन*. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1944.
7. शर्मा आर.वी. *हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1972.
8. सिंह नामवर. *उपन्यास और लोकजीवन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1968.
9. त्रिपाठी आर.सी. *हिंदी उपन्यास: मनोवैज्ञानिक धारा*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 1985.
10. फ्रायड एस. *स्वप्नों की व्याख्या*. लंदन: हॉगार्थ प्रेस; 1900.
11. फ्रायड एस. *इगो और इड*. लंदन: हॉगार्थ प्रेस; 1923.
12. जुंग सी.जी. *सामूहिक अचेतन और आद्यरूप*. लंदन: रूटलेज; 1959.
13. एडलर ए. *व्यक्तिगत मनोविज्ञान का सिद्धांत और व्यवहार*. न्यूयॉर्क: हार्कोर्ट; 1927.
14. मिश्र विद्यानिवास. *हिंदी की शक्ति*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1978.
15. गुप्त चंद्रबली. *मनोवैज्ञानिक उपन्यास परंपरा*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1990.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.